डॉ० ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'

जन्म : 7 सितम्बर 1918 ई०।

जन्म-स्थान : दरभंगा जिलान्तर्गत बहेड़ा गाम।

मृत्यु : 19 जून 1986 ई०।

कृति : 'अनल पथ', 'विद्यापति', (1960), 'कोब्रागर्ल' (1970), 'लोरिक-विजय', (1970), 'अर्द्धनारीश्वर', (1981), 'नैका बनिजारा' (1972), 'राजा सलहेस' (1972), लवहरि-कुशहरि, (1976), 'राय रणपाल', (1976), फुटपाथ, (1978), भारतीक बिलाड़ि (उपन्यास); कण्ठहार, झुमकी (1977), (नाटक); अनेक कथा, अनूदित उपन्यास, संस्मरणात्मक निबंध आदि।

पुरस्कार : 1973 ई० मे **'नैका बनिजारा'** उपन्यास पर साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत।

मिथिलाक कला-संस्कृतिक अनन्य भक्त 'मणिपद्म' मैथिली साहित्यक एक बहुआयामी साहित्यकार छथि। प्राय: सभ विधामे रचना करबामे निष्णात छथि मुदा लोक गाथा पर आधारित कथा ओ उपन्यासक माध्यमे मिथिलाक पारम्परिक संस्कृतिकेँ साहित्य मध्य प्रतिष्ठित कयलनि से अतुलनीय ओ अविस्मरणीय कहल जायत।

पाठ-संदर्भ : प्रस्तुत पाठ एक लोकगाथा थिक। नैकाक विजय गाथा, फूलमणिक धैर्यक परीक्षा ओ ओकर क्षमाशीलताक रोचक वर्णन अछि।

नैका बनिजारा

टहाटही इजोरिया। सड़कक काते कातेक आम्र उपवनसँ मज्जरक मधुगन्ध आबि रहल छलैक। भरि दिनुका थाकल ठेहिआयल पछबा बसात मने इजोरियाक कोरामे अलसाकेँ औँघा रहल छल।

एहन क्षणमे प्रवासीकेँ गाम-घर मन पड़ैत छैक। दू टा छल-छल भरल आँखि सकरुण भावेँ अन्तरमे साकार भऽ अबैत छैक।

"रम्मा रौ, सुन्नभवनमे जेना एकटा दीप जरइ छैक ना ।

रम्मा रौ, कमल नयनसँ जेना झर-झर ओस झरइ छैक ना ।"

आ वैह अबैत छैक बड़द गाड़ीक पंक्ति। देसाउरसँ जिनिस लदने। बछौरक मस्त बाछा सभ, उभड़ खाभड़ पथकेँ मोसरैत आगू बढ़ि रहल छैक। शान्त आ स्तब्ध वातावरणमे कोनो गाड़ीक पहियाक चू-उँ-उँ चीक सङ्गीत गूँजि रहल छैक। टन-टन-टुन-टुन बड़द सभहिक गरदनिसँ लटकैत घंटीक सम्मिलित स्वर ऊपर उठि रहल छैक। ठेहिआयल गाड़ीवान जूआ पर पयर पसारि देलकैक अछि। धारीदार बुताम बाला बनियाइन । हाथमे चाबुक। तेल आ धूरा सिक्त केश। नव-वयस। अगिलका बहलमानक अन्तरक टीस ओकरा अधर परक गीत बनि जाइत छैक। प्रणयक गीत, वियोगक गीत आ बनिजाराक आत्मीयताक अमर गीत -

रम्मा रौ, देह काँपइ पिपरक पात जकाँ ना
रम्मा रौ, मोन काँपइ पुरबा बसात जकाँ ना
लाल पलंग नैका बैसल रहय ना
धनि काँपइ माघ मासक प्रात जकाँ ना।

जेना वातावरणमे आ बहलमान सभहिक मनमे उल्लास भरि देलकैक। गीत ससरल जाइत छैक आ गाड़ी बढ़ल जाइत अछि।

"नैका बनिजारा"क गीत विशेषत: ग्रामीण व्यापारी छौंड़ा, बड़दवान आदिकेँ जहाँ-तहाँ बनिज करयबाला बनिजारा सभहिक गीत छैक। ओना ई सर्वत्र लोकप्रिय छैक।

□ □ □

ढन, ढन, ढन, ढन, ढनाक।

तीस मोनक काँसक घंटा नैका अपनहि हाथेँ सोनाक जंजीर झीकिकेँ बजा देलकैक।

उत्तरमे चारुभरसँ तूर्यनाद होमऽ लागल।

एक लाख बड़द लादि कऽ व्यापार करयबला तरुण नैका गहुमन साँप जकाँ फुफकार छोड़लक। ओकरा मुँहपर स्वेदकण चकमक कऽ उठलैक। आठ वर्षक अवस्थामे ओ ओना बापक सङ व्यापारमे गेल छल। बाप बादमे स्वर्गीय भऽ गेलैक। मुदा नैका आइ बीस वर्षक तरुण भेल। अजस्र माणिक्य आ स्वर्णखंड लऽ कऽ घुरल अछि जे सात देशक सात राजाकेँ दुर्लभ छलनि।

नैका जखन अपन द्विरागमनक हेतु अपन ससुर महाचन्नकेँ चिट्ठी लिखलकनि तँ ओ उत्तर देलथिन– पहिले बेरक अनुरोध पर कतौ द्विरागमन भेलैक अछि। हमरा की बेटी बलाय भेल अछि। दू बेर, चारि बेर अनुरोध विरोध पर द्विरागमन दिन स्वीकार कयल जयतनि। देखल जयतैक परुकाँ साल।

तँ की एक लाख बड़दसँ व्यापार करयबला नैका, एक लाख बड़द आ सताइस हजार बरदीकेँ एक साल धरि अपन द्विरागमनक प्रतीक्षामे बड़दौने रहत। कथमपि नहि। तैयारीक घंट घनघना उठलैक, बड़द सभ लादल जयतैक। राखओ महाचन्न अपन बेटीकेँ आब बारह बरख धरि। जखन बारह बरख पर नैका घूरत तँ बुझल जयतैक।

"ढन ढन ढनाक" नैका बलिष्ठ हाथेँ जंजीर झीकिकेँ घंटा बजबैत रहल। तूर्यनाद द्वारा ओकरा उत्तर भेटैत गेलैक जे, बड़द, बरदी आ व्यापारी सभ प्रस्तुत भऽ रहल अछि।

ता की ओकर अनुचर दौड़ल अयलैक– अछता-पछता कऽ महाचन्न दिनक स्वीकृति पठा देलनि अछि। काल्हिए द्विरागमन दिन भेलैक अछि। ओ हफसैत-हफसैत बाजल।

''कालि्ह द्विरागमन आ परसू यात्रा। आइए महाचन्नक नगरीक हेतु प्रस्थान। की व्यापारिक यात्राकेँ स्थगित कऽ देल जाय। विजय-घंटा बजा कऽ यात्रा की स्थगित करब। लोक कहत जे बहुक मुँह देखिकेँ नैका भरमि गेल। से द्विरागमनो करब आ यात्रा सेहो हेतैक ।

''ढन ढन ढनाक।'' ओ अन्तिम बेर जंजीर झिकलक आ तमतमाइत डेगेँ ओहिठामसँ चलि पड़ल।

□ □ □

रम्मा रौ—नह सँ धरतीकेँ खोधऽ लगलैक ना
रम्मा रौ—आँचर पकड़ि नैका बोधै लगलैक ना
रातिमे फुलल कमल फूल मने ना।
चान सुरुज समतूल मने ना।

नैका कोबर घरक मधु-सागरमे भसिआय लागल। पत्नीक मुख-श्री देखिकेँ नेहाल भऽ गेल। 'लक्ष्मी सनक मुँह तँ देखलौँह' नैका विचारलक 'कने सरस्वती सनक बुद्धिक परीक्षा ली'।

''बड़ भूख लागल अछि प्राणेश्वरी!'' नैका कहलकैक ''मुदा केओ बुझय नहि। जँ केओ बुझि गेल तँ लाजे ग्लानिसँ हम बीत जायब।''

महाधनी महाचन्नक एकमात्र सन्तान 'फूलमणि' सोचमे पड़ि गेलि। ओ चुप्पे विदा भऽ गेलि। अपनहिसँ गाय दुहलक, तुलसी फूलक धानकेँ झुट्टी छोड़ा कऽ चनरौटा पर चानन काठीसँ चाउर छोड़ौलक आ सोनाक कटोरामे दीप पर खीर रान्हि कऽ स्वामीकेँ तृप्त कयलक।

रम्मा रौ—नैकाक मनमे परतीत भेलइ ना
छने छन अधिक पिरीत भेलइ ना
कि नैका आकाश ताकि झमान भेलइ ना
कि राति अहीमे बीत गेलइ ना।

□ □ □

नैकासँ जे जेठ बहिन तकर बिआह दूरक धनपतिसँ भेल छलैक। नैकाक छोट बहिनिक नाँओ छलैक तिलेश्वरी । रूपगर्विता 'तिलेसरी' महाक्रूर छलि। कतेककेँ ओ खाल झिकवाकेँ भुस्सा झोखौने छलि। ओकरा

डरे लोक केराक भालरि जकाँ काँपय। नैकाक राज काज वैह चलाबइ। अपना माइक महादुलारू छलि।

से परिछने कालमे भाउजक सौन्दर्य देखि ओ झमान भऽ उठलि। ईर्ष्या नागिन ओकरा अन्तरमे फुफकारि उठलैक--

रम्मा रौ---चान सन मुँह देखि तिलेसरी पजरइ ना

जहिना पुआरक धधरा होइ ना।

नैकाकेँ सासुरमे अपार धन भेटलैक। स्वर्ण रत्न आ दुर्लभ वस्तु सभकेँ के पुछैए। मुदा सभसँ अपूर्व वस्तु जे भेटलैक ओ छलैक---'बाछा तिलंगा।'

धौलगिरि सन शृंगु छल ओकर उठल ना
पाथर-कुनल सन पीठ गठल ना
आध मोनक सोन घंटा गरदनि लटकल ना
आध कोश आगुए चलइ लोक हँटल ना।
ई बाछा तिलंगा फूलमणिक धर्मक भाइ छलैक।

□ □ □

तिरियाक मुँह देखि नैका सन प्रतापशाली व्यापारी अड़कि जाय तँ चारू भर लोक भभारा दितैक, तेँ चलि पड़ल नैका। एक लाख बड़दक खुरसँ उड़ल धूरा आकाशमे पसरि गेलैक। दिन राति जकाँ लागय। फूलमणिकेँ छोड़ैत जेना नैकाकेँ कोँढ़ करेज खहरय लागय। आगू-आगू बाछा-तिलंगा पर सवार ओ बढ़ल मुदा मन फूलमणिएक आँखि पर राखने गेल। बीस कोस पर डेरा खसलैक। मजरल आमक गाछ तर नैका ओछाओन पर बैसल, से बैसले रहि गेल। आँखिमे निन्न कतय? तावत की इजोरिया उगलैक-

रम्मा रौ.... आइ इजोरिया, नैका-हिया पर सालय लगलइ ना
अगिन ज्वालामे नैकाक गत्तर दगधय लगलइ ना।

व्याकुल आ यात्रासँ थाकल बरदी सभ सूति रहल छल आ पहरु सभ औँघाय छल। नैका, तिलंगाक गरदनिसँ चुप्पे सोनाक घंटी खोललक, सवार भेल आ दू पहर राति बितैत-बितैत अपना महल लग जुमि आयल।

ओ फूलमणिक केवाड़ ढकढकौलक।

बिनु केवाड़ खोलनहि फूलमणि पुछलकैक हमर स्वामी व्यापार करय गेल छथि एतेक रातिमे अहाँ के थिकहुँ?''

''हम छी नैका।'' उत्तर भेटलैक।

''प्रमाण?'' पुनः प्रश्न भेलैक।

नैका प्रमाणमे कोवर घरक खीरक वर्णन सुनौलकैक।

फूलमणि केवाड़ खोललकैक। नैका आगू बढ़ल तँ फूलमणि ओकरा आलिङनमे चिन्तित भेल कहलकैक जँ अहाँक सम्पर्कसँ हमरा दोसर दिन राति भऽ जाय तँ सभ हमरा अहाँक अनुपस्थितिक दुआरे कलंकिनी कहत।

''कहत तँ कहत'' नैका पुरुषक जुम्मुसमे बाजल-''हमरा घुरै तक अहाँ अयश झेलब सैह की ?''

फुलमणि कानि उठलि-''जँ हमर ओइ भावी सन्तानक प्राण संकटमे पड़इ?''

नैका अपना सङसँ, एकटा मणि-माणिक गाँथल सोनाक सूत फूलमणिकेँ दैत कहलकैक-ई ओकरा बाँहिपर बान्हि देबैक। ई एकटा साधुक देल छिऐक। ओ नेना ने मारने मरत, ने जारने जरत। ने केओ आन ओकरा बाँहिपरसँ ई हटा सकतैक आ ने ई ओकरा बाँहि पर वयस क्रमे छोट वा पैघ होयतैक।

नैका विलास-रत भऽ गेल। आध पहर राति रहिते, तिलंगापर चुप चाप बैसिकेँ पूर्व स्थान पर आबि गेल।

□ □ □

तिरिया कोना पुरुष-झमार झांपत ना
कोना सौंसे देहक लक्षण झांपत ना
आँखि सिनुर, मुँह काजर भेलइ ना
मसकल पटोर जेना झामर भेलइ ना

से तिलेसरीक आँखिसँ पुरुष-स्पर्शक चेन्ह नुकायल नहि रहलैक। ओकरा कलंकित प्रमाणित कऽ तिलेसरी फूलमणिकेँ घरसँ निकालि बहरघरामे डेरा देलकैक। किछु दिनमे फूलमणिकेँ गर्भक लक्षण प्रकट भेलैक। फूलमणि,

तिलेसरिक नाना अत्याचारकेँ सहैत रहलि। ओ तिलेसरीकेँ कहलकैक–''अपना भाइकेँ अबइ तक हमरा सन्तानकेँ जीबै दिअ। तखन जे दंड भेटत से माथ पर कऽ लेब।''

फूलमणिकेँ पुत्र जन्म लेलकैक। फूलमणि ओकरा दहिना हाथमे ओ स्वर्ण-सूत्र बान्हि देलकैक आ भयानक रात्रिमे बहराकेँ ओकरा एकटा कुम्हारक आबाक मृत्तिकापात्रमे नुका अयलैक।

कनिएँ कालमे तिलेसरीक पठाओल डोम-चंडाल धम्मसँ आबि गेलैक, नवजात शिशुक हत्या करक हेतु फूलमणि कानय लागलि-अइ बहरघरासँ कखन हुड़ार कि गीदड़ बच्चाकेँ उठा कऽ लऽ गेलैक से की हम बुझलिऐक !

डोम-चंडाल घुरि गेल।

आबामे आगि लेसि दू दिनक बाद जखन ओ निस्सन्तान कुम्हार दम्पति आबा खोललक तँ देखैत अछि जे एक भाग आबा कांचे अछि आ एकटा मृत्तिका पात्रमे एक जीवित शिशु सुरक्षित अछि। ओ पाल-पालकेँ ओकरा पओलक आ घर लऽ जाकऽ तन-मन-धनसँ ओहि शिशुक पालन करय लागल।

□ □ □

तिलेसरी, एकटा डोमक हाथेँ एक लाख टाकामे फूलमणिकेँ बेचि ओकरा घरसँ निकालि देलक। डोम ओहन सुन्दर स्त्रीकेँ पाबि हाथमे छौँकी नेने ओकरा हँकैत जकाँ विदा भेल। फूलमणिक विपत्तिसँ चान-सूरुज आ गाछ-बिरिछ कानय लागल। बड़ कौशलसँ अपन सतीत्वक रक्षा करैत ओ सभ एकटा महानगरीमे पहुँचल। ओहिठाम बड़ धर्मात्मा महासेठ छल। फूलमणि ओकरासँ अपन त्राणक हेतु अश्रु-सिक्त प्रार्थना कयलक। दयार्द्र भऽ सेठ ओकरा ओहि डोमसँ सवा लाख टाकामे कीनि लेलक। किछुए दिनमे फूलमणि अपन सद्गुणसँ ओहि महानगरीकेँ अभिभूत कऽ लेलक। ओकरा सलाहसँ ओहि सेठक कोटि-कोटि आय बढ़ि गेलैक। सेठ निस्सन्तान छल। से फूलमणिक पायरक लक्षणसँ सेठक पत्नीकेँ पुत्र-रत्न भेलैक। फूलमणि गंगाकातमे राजपथ पर, धर्मशाला आ पनिशाला चलबय। सदावर्त्त देअय।

□ □ □

4. ससुर द्वारा द्विरागमनक स्वीकृति पाबि नैका की निर्णय लेलक ?
5. तिलेश्वरी के छलि ?
6. फूलमणि नैकाक क्षुधाक पूर्ति अकस्मात कोना कयलक ?
7. तिलेश्वरीकेँ ककरासँ ईर्ष्या भेलैक ?
8. बच्चाक हत्याक लेल तिलेश्वरी ककरा पठौलक ?
9. फूलमणिकेँ तिलेश्वरी ककरा हाथेँ बेचलक?
10. तिलंगा ककर नेओत लेलक?
11. नैका घुरि अयलाह तथा तिलेश्वरीक वध करबाक निर्णय लेलनि। एहि पर फूलमणिक की व्यवहार रहलैक ?

गतिविधि:

1. रम्मा रौ, देह काँपइ पिपरक पात जकाँ ना
   रम्मा रौ मोन काँपइ पुरबा बसात जकाँ ना
   . . . . . .
   . . . . . .
2. तिलंगाक कथा फराकसँ लिखू।
3. गीतक पाँती सभ कंठस्थ करू ।
4. नैकाक चरित्र-चित्रण करू ।

निर्देश :

(क) शिक्षक छात्रकेँ बुझबथि जे लोककथा ककरा कहल जाइछ ।

(ख) छात्रकेँ दोसरो लोककथा शिक्षक सुनाबथि।

(ग) 'मणिपद्म'क अन्यान्य कृति सँ छात्रकेँ परिचित कराओल जाय।

(घ) मिथिलामे अनादि कालहिसँ लोक साहित्यकेँ लोककंठ अथवा परम्परा द्वारा प्रश्रय भेटैत रहल अछि । लोरिक-सलहेस, जट-जटिन, सामा-चकेवा, पमरियाक नाच आदि लोकगीत, लोकनाट्य अथवा लोक नृत्यक रूपमे लोकसाहित्यक विविध रूप दृष्टिगोचर होइछ। शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओहि समृद्ध परम्पराक आलोकमे छात्रक ज्ञान-विस्तार करथि ।

□